रत्नकरण्ड श्रावकाचार में वर्णित अणुव्रत एवं शीलव्रत

डॉ० बेबी कुमारी

जैन आचार–मीमांसा में अणुव्रतों का अत्यधिक महत्व है। जैन श्रावक के लिए अणुव्रतों का पालन करना नितान्त आवश्यक बताया गया है। रत्नकरण्डश्रावकाचार में अणुव्रतों का अतिचार सहित विवेचन किया गया है। इस प्रसंग में इस ग्रन्थ में समन्तभद्र ने अणुव्रतों के पालन में अणुव्रतों के प्रसिद्ध एवं पांचों पापों में प्रसिद्ध व्यक्तियों के नाम देकर निरतिचार व्रतों का पालन का फल दर्शाते हुए उन्होंने मूल गुणों के नाम भी गिनाए हैं। जैनाचार में मुनि और गृहस्थ के लिए अलग–अलग व्रत बतलाए गए हैं। मुनि के लिए महाव्रत है तथा गृहस्थ के लिए अणुव्रत है। यहाँ अणु के साथ व्रत शब्द लगा हुआ है जिसका अर्थ है व्रतों का एक देश में पालन करना और स्थूल पापों से विरत रहना।